



Anuraag Kumar

08 May 2017

05:05 AM

Muzaffarpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121793201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 7-08/05/2017
दिन _____: रवि-सोमवार
जन्म समय _____: 05:05:00 घंटे
इष्ट _____: 59:54:20 घटी
स्थान _____: Muzaffarpur
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:07:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:23:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:11:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 05:16:32 घंटे
वेलान्तर _____: 00:03:27 घंटे
साम्पातिक काल _____: 20:20:31 घंटे
सूर्योदय _____: 05:07:15 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:23:11 घंटे
दिनमान _____: 13:15:55 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 23:29:14 मेष
लग्न के अंश _____: 21:54:59 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: कन्या - बुध
नक्षत्र-चरण _____: हस्त - 4
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: वज्र
करण _____: कौलव
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: ठ-ठकुर
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृष

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur
9693608763
shreesiddhivinayakastro@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1939	वैशाख	18
पंजाबी	संवत : 2074	वैशाख	26
बंगाली	सन् : 1424	वैशाख	24
तमिल	संवत : 2074	चिथिराई	25
केरल	कोल्लम : 1192	मेदम	25
नेपाली	संवत : 2074	वैशाख	25
चैत्रादि	संवत : 2074	वैशाख	शुक्ल 13
कार्तिकादि	संवत : 2074	वैशाख	शुक्ल 13

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 12
तिथि समाप्ति काल _____ : 21:42:34
जन्म तिथि _____ : 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उ०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 07:44:30 घंटे
जन्म योग _____ : हस्त
सूर्योदय कालीन योग _____ : हर्षण
योग समाप्ति काल _____ : 15:00:25 घंटे
जन्म योग _____ : वज्र
सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
करण समाप्ति काल _____ : 09:03:29 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 53:21:15
भभोग _____ : 64:57:20
भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 1 वर्ष 9 मा 9 दि

घात चक्र

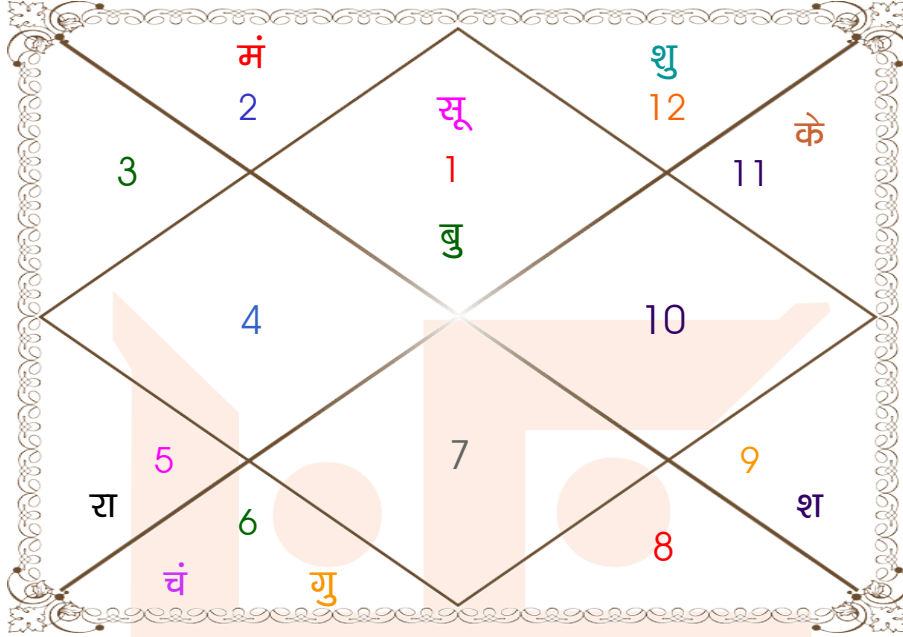
मास _____ : भाद्रपद
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : श्रवण
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : मेष
चन्द्र _____ : मिथुन
मंगल _____ : वृष
बुध _____ : मीन
गुरु _____ : मिथुन
शुक्र _____ : कर्क
शनि _____ : मीन
राहु _____ : सिंह

Shree Siddhivinayak Astro

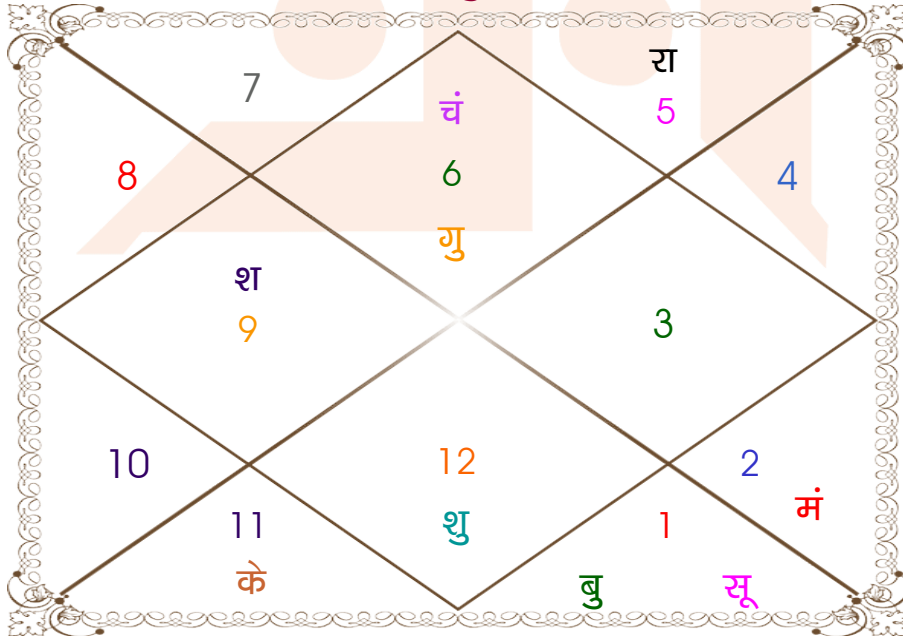
Gola Bandh Road Muzaffarpur
9693608763
shreesiddhivinayakastro@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

शु	बु ल सू	मं	
के			
			रा
श			गु चं

लग्न कुण्डली

मं	बु ल सू	शु
		के
रा		श
चं गु		

विंशोत्तरी
चन्द्र 1वर्ष 9मा 9दि
चन्द्र

08/05/2017

16/02/2129

चन्द्र	16/02/2019
मंगल	15/02/2026
राहु	16/02/2044
गुरु	16/02/2060
शनि	16/02/2079
बुध	16/02/2096
केतु	17/02/2103
शुक्र	17/02/2123
सूर्य	16/02/2129

योगिनी
संकटा 1वर्ष 5मा 1दि
भामरी

08/10/2024

08/10/2028

भामरी	20/03/2025
भद्रिका	09/10/2025
उल्का	09/06/2026
सिद्धा	20/03/2027
संकटा	08/02/2028
मंगला	19/03/2028
पिंगला	09/06/2028
धान्या	08/10/2028

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

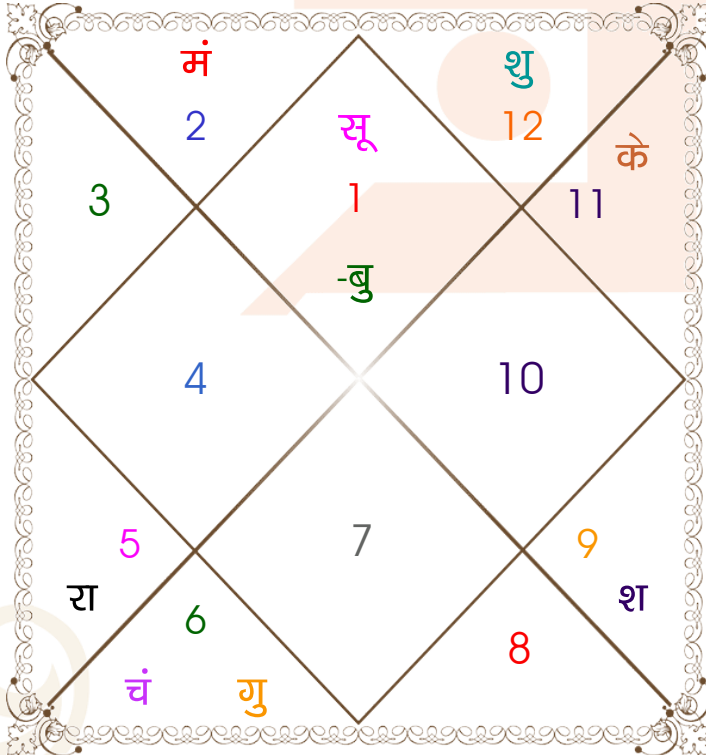
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	21:54:59	427:17:32	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	---
सूर्य			मेष	23:29:14	00:58:02	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	शनि	उच्च राशि
चंद्र			कन्या	20:57:53	12:15:48	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि
मंगल			वृष	17:15:59	00:40:52	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	शनि	सम राशि
बुध			मेष	00:53:31	00:20:00	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	सम राशि
गुरु	व		कन्या	20:40:21	00:05:29	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			मीन	11:07:10	00:39:08	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	चंद्र	उच्च राशि
शनि	व		धनु	02:54:15	00:02:52	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
राहु	व		सिंह	06:12:43	00:08:02	मघा	2	10	सूर्य	केतु	राहु	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	06:12:43	00:08:02	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	शत्रु राशि
हर्ष			मेष	01:41:59	00:03:15	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	---
नेप			कुंभ	19:45:01	00:01:14	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	मंगल	---
प्लूटो	व		धनु	25:13:39	00:00:30	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
दशम भाव			मक	08:44:35	--	उत्तराषाढा	--	21	शनि	सूर्य	शुक्र	--

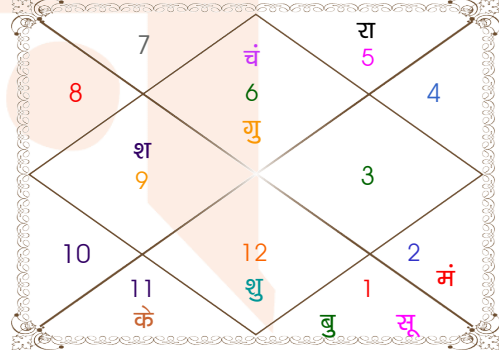
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:05:48

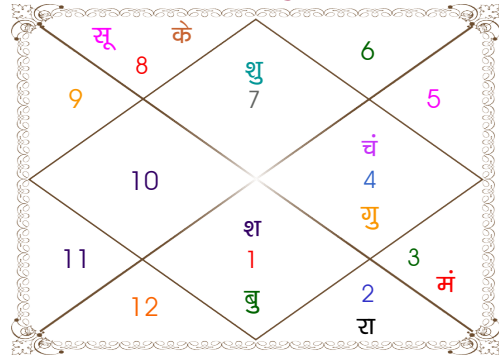
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 04:43:15	मेष 21:54:59
2	वृष 04:43:15	वृष 17:31:31
3	मिथुन 00:19:47	मिथुन 13:08:03
4	मिथुन 25:56:19	कर्क 08:44:35
5	कर्क 25:56:19	सिंह 13:08:03
6	कन्या 00:19:47	कन्या 17:31:31
7	तुला 04:43:15	तुला 21:54:59
8	वृश्चिक 04:43:15	वृश्चिक 17:31:31
9	धनु 00:19:47	धनु 13:08:03
10	धनु 25:56:19	मकर 08:44:35
11	मकर 25:56:19	कुम्भ 13:08:03
12	मीन 00:19:47	मीन 17:31:31

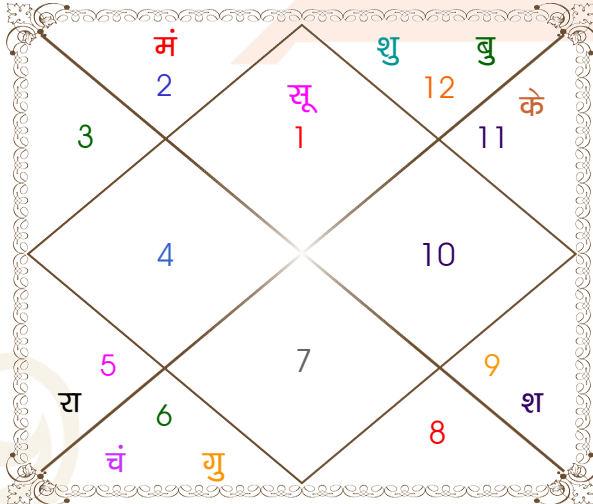
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	21:54:59
2	वृष	20:10:50
3	मिथुन	14:19:19
4	कर्क	08:44:35
5	सिंह	07:10:16
6	कन्या	12:24:25
7	तुला	21:54:59
8	वृश्चिक	20:10:50
9	धनु	14:19:19
10	मकर	08:44:35
11	कुम्भ	07:10:16
12	मीन	12:24:25

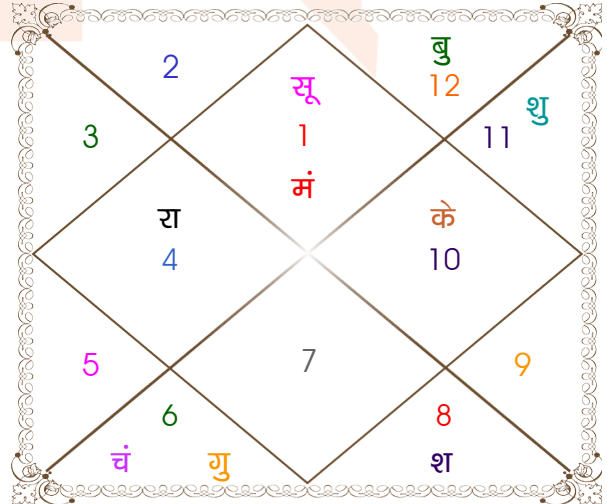
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 1 वर्ष 9 मास 9 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
08/05/2017	16/02/2019	15/02/2026	16/02/2044	16/02/2060
16/02/2019	15/02/2026	16/02/2044	16/02/2060	16/02/2079
00/00/0000	मंगल 15/07/2019	राहु 28/10/2028	गुरु 05/04/2046	शनि 19/02/2063
00/00/0000	राहु 01/08/2020	गुरु 24/03/2031	शनि 16/10/2048	बुध 29/10/2065
00/00/0000	गुरु 08/07/2021	शनि 28/01/2034	बुध 22/01/2051	केतु 08/12/2066
00/00/0000	शनि 17/08/2022	बुध 16/08/2036	केतु 29/12/2051	शुक्र 06/02/2070
00/00/0000	बुध 14/08/2023	केतु 04/09/2037	शुक्र 29/08/2054	सूर्य 19/01/2071
00/00/0000	केतु 10/01/2024	शुक्र 04/09/2040	सूर्य 17/06/2055	चंद्र 19/08/2072
08/05/2017	शुक्र 11/03/2025	सूर्य 29/07/2041	चंद्र 16/10/2056	मंगल 28/09/2073
शुक्र 17/08/2018	सूर्य 17/07/2025	चंद्र 28/01/2043	मंगल 22/09/2057	राहु 04/08/2076
सूर्य 16/02/2019	चंद्र 15/02/2026	मंगल 16/02/2044	राहु 16/02/2060	गुरु 16/02/2079

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
16/02/2079	16/02/2096	17/02/2103	17/02/2123	16/02/2129
16/02/2096	17/02/2103	17/02/2123	16/02/2129	00/00/0000
बुध 14/07/2081	केतु 14/07/2096	शुक्र 18/06/2106	सूर्य 06/06/2123	चंद्र 17/12/2129
केतु 11/07/2082	शुक्र 13/09/2097	सूर्य 18/06/2107	चंद्र 06/12/2123	मंगल 19/07/2130
शुक्र 11/05/2085	सूर्य 19/01/2098	चंद्र 16/02/2109	मंगल 12/04/2124	राहु 17/01/2132
सूर्य 18/03/2086	चंद्र 20/08/2098	मंगल 18/04/2110	राहु 06/03/2125	गुरु 18/05/2133
चंद्र 17/08/2087	मंगल 16/01/2099	राहु 18/04/2113	गुरु 24/12/2125	शनि 18/12/2134
मंगल 13/08/2088	राहु 04/02/2100	गुरु 18/12/2115	शनि 06/12/2126	बुध 18/05/2136
राहु 03/03/2091	गुरु 11/01/2101	शनि 17/02/2119	बुध 12/10/2127	केतु 17/12/2136
गुरु 08/06/2093	शनि 19/02/2102	बुध 17/12/2121	केतु 17/02/2128	शुक्र 09/05/2137
शनि 16/02/2096	बुध 17/02/2103	केतु 17/02/2123	शुक्र 16/02/2129	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 1 वर्ष 9 मा 13 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु 15/02/2026 28/10/2028	राहु - गुरु 28/10/2028 24/03/2031	राहु - शनि 24/03/2031 28/01/2034	राहु - बुध 28/01/2034 16/08/2036	राहु - केतु 16/08/2036 04/09/2037
राहु 13/07/2026 गुरु 22/11/2026 शनि 27/04/2027 बुध 14/09/2027 केतु 10/11/2027 शुक्र 22/04/2028 सूर्य 11/06/2028 चंद्र 01/09/2028 मंगल 28/10/2028	गुरु 22/02/2029 शनि 11/07/2029 बुध 12/11/2029 केतु 02/01/2030 शुक्र 29/05/2030 सूर्य 11/07/2030 चंद्र 22/09/2030 मंगल 13/11/2030 राहु 24/03/2031	शनि 05/09/2031 बुध 30/01/2032 केतु 31/03/2032 शुक्र 21/09/2032 सूर्य 12/11/2032 चंद्र 06/02/2033 मंगल 08/04/2033 राहु 11/09/2033 गुरु 28/01/2034	बुध 09/06/2034 केतु 02/08/2034 शुक्र 05/01/2035 सूर्य 20/02/2035 चंद्र 09/05/2035 मंगल 02/07/2035 राहु 19/11/2035 गुरु 22/03/2036 शनि 16/08/2036	केतु 08/09/2036 शुक्र 11/11/2036 सूर्य 30/11/2036 चंद्र 01/01/2037 मंगल 23/01/2037 राहु 22/03/2037 गुरु 12/05/2037 शनि 12/07/2037 बुध 04/09/2037
राहु - शुक्र 04/09/2037 04/09/2040	राहु - सूर्य 04/09/2040 29/07/2041	राहु - चंद्र 29/07/2041 28/01/2043	राहु - मंगल 28/01/2043 16/02/2044	गुरु - गुरु 16/02/2044 05/04/2046
शुक्र 06/03/2038 सूर्य 29/04/2038 चंद्र 30/07/2038 मंगल 02/10/2038 राहु 15/03/2039 गुरु 08/08/2039 शनि 29/01/2040 बुध 02/07/2040 केतु 04/09/2040	सूर्य 20/09/2040 चंद्र 18/10/2040 मंगल 06/11/2040 राहु 25/12/2040 गुरु 07/02/2041 शनि 31/03/2041 बुध 16/05/2041 केतु 05/06/2041 शुक्र 29/07/2041	चंद्र 13/09/2041 मंगल 15/10/2041 राहु 05/01/2042 गुरु 19/03/2042 शनि 14/06/2042 बुध 31/08/2042 केतु 02/10/2042 शुक्र 01/01/2043 सूर्य 28/01/2043	मंगल 20/02/2043 राहु 18/04/2043 गुरु 08/06/2043 शनि 08/08/2043 बुध 01/10/2043 केतु 24/10/2043 शुक्र 27/12/2043 सूर्य 15/01/2044 चंद्र 16/02/2044	गुरु 30/05/2044 शनि 30/09/2044 बुध 18/01/2045 केतु 05/03/2045 शुक्र 13/07/2045 सूर्य 21/08/2045 चंद्र 25/10/2045 मंगल 09/12/2045 राहु 05/04/2046
गुरु - शनि 05/04/2046 16/10/2048	गुरु - बुध 16/10/2048 22/01/2051	गुरु - केतु 22/01/2051 29/12/2051	गुरु - शुक्र 29/12/2051 29/08/2054	गुरु - सूर्य 29/08/2054 17/06/2055
शनि 30/08/2046 बुध 08/01/2047 केतु 03/03/2047 शुक्र 04/08/2047 सूर्य 19/09/2047 चंद्र 05/12/2047 मंगल 28/01/2048 राहु 15/06/2048 गुरु 16/10/2048	बुध 11/02/2049 केतु 31/03/2049 शुक्र 16/08/2049 सूर्य 26/09/2049 चंद्र 04/12/2049 मंगल 22/01/2050 राहु 26/05/2050 गुरु 13/09/2050 शनि 22/01/2051	केतु 11/02/2051 शुक्र 09/04/2051 सूर्य 26/04/2051 चंद्र 24/05/2051 मंगल 13/06/2051 राहु 03/08/2051 गुरु 18/09/2051 शनि 11/11/2051 बुध 29/12/2051	शुक्र 08/06/2052 सूर्य 27/07/2052 चंद्र 16/10/2052 मंगल 12/12/2052 राहु 07/05/2053 गुरु 14/09/2053 शनि 15/02/2054 बुध 03/07/2054 केतु 29/08/2054	सूर्य 13/09/2054 चंद्र 07/10/2054 मंगल 24/10/2054 राहु 07/12/2054 गुरु 15/01/2055 शनि 02/03/2055 बुध 13/04/2055 केतु 30/04/2055 शुक्र 17/06/2055

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 2, 8, 5
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

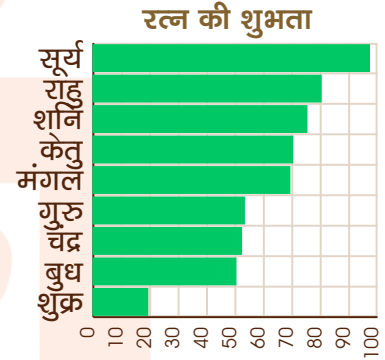
shreesiddhivinayakastro@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	97%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	80%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	75%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	70%	धनार्जन, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	69%	धन, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
पुखराज	गुरु	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, कम खर्च
मोती	चंद्र	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, सुख
पन्ना	बुध	50%	स्वास्थ्य, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
हीरा	शुक्र	19%	व्यय, धन हानि, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	16/02/2019	100%	64%	69%	56%	53%	19%	75%	67%	58%
मंगल	15/02/2026	100%	58%	81%	25%	59%	19%	75%	67%	77%
राहु	16/02/2044	84%	28%	56%	50%	53%	31%	81%	92%	58%
गुरु	16/02/2060	100%	58%	75%	25%	66%	0%	75%	80%	70%
शनि	16/02/2079	84%	28%	56%	56%	53%	31%	88%	86%	58%
बुध	16/02/2096	100%	28%	69%	62%	53%	31%	75%	80%	70%
केतु	17/02/2103	84%	28%	75%	50%	53%	31%	62%	67%	83%
शुक्र	17/02/2123	84%	28%	69%	56%	53%	44%	81%	86%	77%
सूर्य	16/02/2129	100%	58%	75%	50%	59%	0%	62%	67%	58%

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/05/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/08/2095-11/10/2097 02/05/2098-20/06/2098	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098 20/06/2098-26/12/2099 17/03/2100-16/09/2100	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100 16/09/2100-03/12/2102	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

फल

शुभ
अशुभ
सम
शुभ
शुभ

क्षेत्र

भाग्योदय
बुरा स्वास्थ्य
सन्तति कष्ट
शत्रु व रोग
दम्पति

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur
9693608763
shreesiddhivinayakastro@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराकम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि से पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराकम से भाग्य का निर्माण करेंगे। जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे साथ ही आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगे।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाए रखेंगे तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगे साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे ।



Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur
9693608763
shreesiddhivinayakastro@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव में शनि स्थित है एवं राहु से दृष्ट है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, गुरु और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्णता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं कूर होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छ और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और

सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- मंगल
(16/02/2019 - 15/02/2026)**

मंगल की महादशा 16/02/2019 को आरम्भ और 15/02/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल द्वितीय भाव में अवस्थित है। इसके पूर्व आपकी चन्द्रदशा चल रही थी जिसकी अवधि 10 वर्ष की थी। मंगल के पंचम भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको बच्चों से सुख, उत्तम शिक्षा और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल की इस दशा में आपको धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा-काल में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप में आत्मविश्वास तथा पहल-शक्ति होगी और आप सक्रिय तथा स्फूर्तिवान होंगे। कुछ मौसमी बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। सरदर्द, ज्वर, संक्रमण, ताप संबंधी बीमारियों आदि की सम्भावना है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धन-संपत्ति का संचय करेंगे। आपको पिता से लाभ होगा। आपको कुछ-पैतृक-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। व्यवसाय और जीवन-वृत्ति से उपार्जन में भी वृद्धि होगी। मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। अपनी जीविका के लिये सैन्य सेवा, सर्जरी तथा चिकित्सा कार्य, दन्तचिकित्सा, भूगर्भ-विज्ञानी अथवा रसायनज्ञ के कार्यों का चयन कर सकते हैं। आप असैनिक तथा यांत्रिक अभियंत्रण और औद्योगिक प्रतिष्ठानों में अच्छा करेंगे। लौह-इस्पात, खेल के सामानों, ताम्बे, खनिज पदार्थों आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के लिये दशा उत्तम रहेगी। आपकी आय में वृद्धि तथा पदोन्नति होगी और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के लिये समय समृद्धिशाली रहेगा। आय तथा गतिविधियों में वृद्धि होगी। व्यापार का विस्तार हो सकता है और व्यापार से जुड़े लोग व्यस्त रहेंगे। आर्थिक सफलता के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन के सुख मिलेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन की प्राप्ति होगी। मंगल तथा बुध की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद के मामले लाभदायक होंगे। यह अवधि सभी आर्थिक कारोबार के लिए उत्तम है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी तथा शनि और मंगल की अन्तर्दशाओं लम्बी यात्राएँ होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। गणित, विज्ञान तथा प्रशासन व प्रबन्धन से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन लाभदायक होगा। आप परीक्षाओं में सफल होंगे। इस अवधि में आप उच्च शिक्षा भी आरम्भ कर सकते हैं। आप अपने स्वभावगत नेतृत्व तथा

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

बैद्धिक गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके संबंध मधुर रहेंगे। आपके बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर रहेंगे और आपको उनसे बहुत सुख प्राप्त होगा। वे अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे और आप उनसे गौरवान्वित होंगे। आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ मिल सकता है। सद्भावपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने के लिए कटु भाषा का प्रयोग न करें। आपकी माता को इस अवधि में लाभ प्राप्त होगा और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके पिता को उनके शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों का शुभ उद्देश्यों के लिए व्यय होगा और उनकी यात्रा होगी तथा आपके बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, आय, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी जिनसे आपको लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में उसकी अन्तर्दशा के कारण आपको पिता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी यात्रा होगी। इसके पश्चात् आरम्भ होनेवाली राहु की अन्तर्दशा के कारण समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के कारण आपकी शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सुख में वृद्धि होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा के कारण आय-व्यय समान होंगे और आपकी यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका विवाह हो सकता है और साझेदारों से लाभ और सुख की प्राप्ति हो सकती है जबकि केतु के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन और छोटी यात्राओं की प्राप्ति हो सकती है जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सन्तान से सुख और निवेश तथा सट्टे में लाभ होगा।

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

**महादशा :- राहु
(15/02/2026 - 16/02/2044)**

राहु की महादशा 15/02/2026 को आरम्भ और 16/02/2044 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु पंचम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि ग्यारहवें भाव पर है। इसके पहले आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको इस दशा के दौरान सुख, अचल सम्पत्ति में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा, तकनीकी शिक्षा की प्राप्ति होगी और जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपका शक्ति मिलेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन समस्या, आँत सम्बन्धी समस्या, आल्सर और घाव, चर्मरोग और उदर-रोग (औरतों को) आदि बीमारियाँ हो सकती है। आपको बच्चे के जन्म के समय सावधान रहना चाहिए। कुछ सावधानी बरतकर इनमें से कुछ बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

Shree Siddhivinayak Astro

Gola Bandh Road Muzaffarpur

9693608763

shreesiddhivinayakastro@gmail.com

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। सहे तथा निवेश से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। ग्यारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आपके मित्र होंगे जो आपके लिए लाभदायक होंगे। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेख, कम्प्यूटर राजनीति, खेल, प्रबन्धन, पदाधिकारी कापद आदि का चयन कर सकते हैं। लोहा-इस्पात, चमड़े के सामान, दवा, एण्टीवायोटिक्स, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों का कुछ परिवर्तन, आय में अचानक वृद्धि, कार्य-स्थान में अनपेक्षित प्रगति और स्थिति कठिन होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की भी अनपेक्षित प्रगति, अचानक लाभ और हानि होगी। आप अपने काय अथवा व्यापार में परिवर्तन कर सकते हैं। कोई भी परिवर्तन लाभदायक होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको लाभ व सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद के लेन-देन के सभी मामलों के लिए यह समय लाभदायक है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और चन्द्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। यात्रा में सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, प्रबन्धन, कम्प्यूटर विज्ञान, विधि, दवा, खेल आदि से संबंधित विषय आपके लिए अच्छा होगा। आप दृढ़प्रतिज्ञ हैं और आपको यश तथा ख्याति मिलेगी। परमविज्ञान में भी आपकी रुचि होगी।

परिवार :

आपके बच्चों को सफलता तथा समृद्धि मिलेगी और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को लाभ और अर्थ-लाभ का अवसर मिलेगा और उनकी इच्छा की पूर्ति होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता को लाभ और समृद्धि मिलेगी जबकि आपके पिता को समृद्धि मिलेगी तथा उनकी यात्रा और तीर्थाटन होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की यात्रा होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और यातायात में लाभ होगा और बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा और वाणिज्य-व्यापार में लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति तथा तकनीकी शिक्षा मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा आपके लिए भाग्यशाली होगा यद्यपि विरोधियों के कारण कुछ मामूली समस्या हो सकती है। शनि की महादशा कष्टकर सिद्ध होगी किन्तु कुछ भौतिक लाभ और यात्रा हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी जिसमें उनकी यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको लाभ तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में पारिवारिक सुख और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सम्पत्ति, सुख और सफलता मिलेगी जबकि मंगल के फलस्वरूप सुख, बच्चे का जन्म तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी।

**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(15/02/2026 - 28/10/2028)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/02/2026 को प्रारंभ होकर 16/02/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 15/02/2026 को प्रारंभ होकर 28/10/2028 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है।

इस अवधि में आप भावुक हो सकते हैं। प्रेम-प्रसंग में सफलता मिल सकती है। समाज में भी सफल रहेंगे जिससे खुशी मिलेगी। सट्टेबाजी, शेयर आदि में लाभ हो सकता है। हृदय रोग से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(28/10/2028 - 24/03/2031)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/02/2026 को प्रारंभ होकर 16/02/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 28/10/2028 को प्रारंभ होकर 24/03/2031 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठे भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 10, 12, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा आपके लिए अशुभ साबित हो सकती है। आप आलसी, भाग्यहीन और डरपोक हो सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मगर आप कुछ बेचैन रहेंगे। प्रत्येक व्यक्ति के साथ आवश्यकता से अधिक सावधानी से व्यवहार करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर तर्जनी में धारण करें।